ISSN 2321-4945

द्विभाषी

राष्ट्रसेवक

वर्ष : 14 ❖ अंक : 6 ❖ सितंबर, 2021

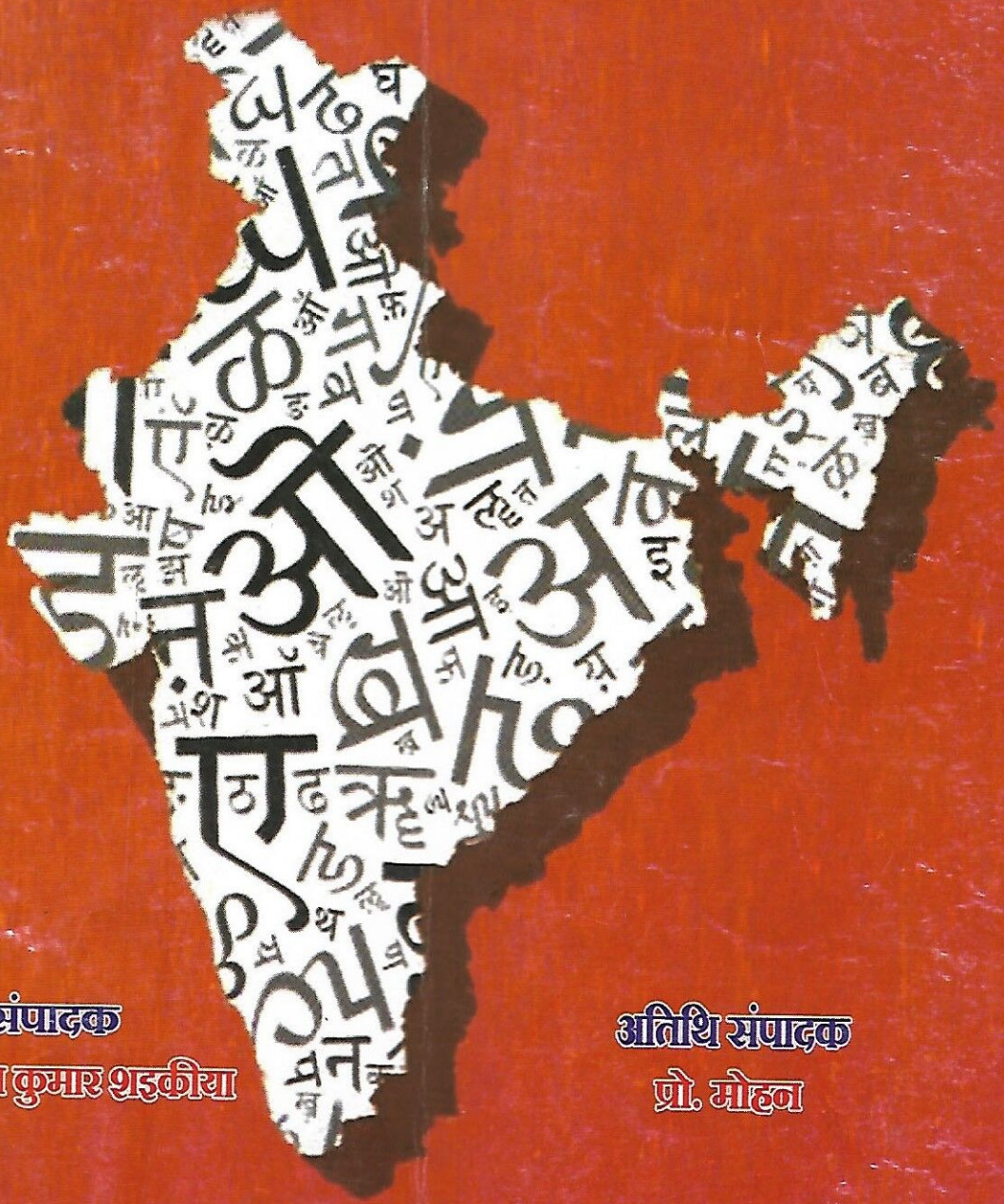

संपादक
डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

अतिथि संपादक
प्रो. मोहन

एक हृदय हो भारत जननी

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

[केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित]

सलाहकार

श्री हरिकांत नाथ
प्रो. आर.एस. सर्राजु
प्रो. मोहन
डॉ. नारायण तालुकदार
डॉ. दिलीप कुमार मेधी
डॉ. अच्युत शर्मा
शंकर प्रसाद साहू

संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
(चलभाष : 9435340285)

अतिथि संपादक

प्रो. मोहन
(दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)
(चलभाष : 9871115500)

कार्यकारी संपादक

रामनाथ प्रसाद
(चलभाष : 9101541395)

शब्द संयोजन व अलंकरण

रतिकांत कलिता

एक प्रति : बीस रुपये
अर्द्धवार्षिक : सौ रुपये
वार्षिक शुल्क : दो सौ रुपये

प्रकाशक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया
मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
गुवाहाटी-781032

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लेखादि भेजने का पता :

संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
रूपनगर, गुवाहाटी-781032
E-mail: arps.guwahati@gmail.com

Postal Rgd. No. GH-127/2019-2021

ISSN 2321-4945
UGC CARE LIST approved Research Journal

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रकाशित

भाषा, साहित्य, कला व संस्कृति विषयक शोध-पत्रिका

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : १४ अंक : 6 सितंबर, २०२१

विषय-सूची

: हिंदी विभाग :

◆ संपादकीय		2
◆ हिंदी भाषा : प्रचार-प्रसार के नए आयाम	✍ प्रो. मोहन	4
◆ बहुलवादी भारत एवं हिंदी	✍ श्री अजयेंद्र नाथ त्रिवेदी	9
◆ बंगाल का नवजागरण और हिंदी	✍ डॉ. मजीद सेख	12
◆ रामचरितमानस में चरित्र निर्मिति	✍ डॉ. अमित कुमार शर्मा	18
◆ असमीया बाल साहित्य में ज्योतिप्रसाद अगरवाला का स्थान	✍ डॉ. जिनाक्षी चुतीया	23
◆ न्यायालयी (प्रयोजनमूलक) हिंदी में वचन व्यवस्था	✍ डॉ. राजवीर सिंह	31
◆ वर्तमान का कंप्यूटर अनुवाद और भविष्य की संभावनाएँ	✍ तृप्ति रानी आचार्य	37
◆ राष्ट्रभाषा के विकास में अनुवाद का महत्व	✍ अशोक शर्मा 'अतुल'	42
◆ पूर्वोर के शैक्षणिक समाज-संस्कार की एक जीवंत गाथा : मेरेंग	✍ सिराजुल हक	44
◆ भारतीय समाज में नारी	✍ डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी	50
◆ जल टूटता हुआ और पिता-पुत्र उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक विघटन	✍ शहिदुल इस्लाम खान	54
◆ नव गीत	✍ पंकज मिश्र 'अटल'	61

असमीया विभाग

◆ অসমৰ সাম্প্রতিক শিক্ষা ব্যৱস্থাত অবিৰত আৰু সামগ্রিক মূল্যায়ন ঃ এটি আলোচনা	✍ মনীষা চলিহা	৬৩
◆ অসম আৰু আসমৰ লোকৰ পৰিচয়	✍ মূল-অস্কাৰ ফ্লেক্স অনুবাদ - চেলিম এম আলী	৬৮
◆ হিন্দু-মুছলমান (কবিতা)	✍ উষা গগৈ	৭৩
◆ মোৰ সপোনৰ সূর্যৰ মানুহ (কবিতা)	✍ নীলমণি ফুকন	৭৬

लेखक/लेखिकाओं से अनुरोध : ◆ 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' के लिए भेजे जानेवाले लेखादि भाषा, साहित्य, समाज, कला, संस्कृति विषयक होने चाहिए। ◆ भेजे गये लेखादि साफ अक्षरों में या टाइप कराकर ही भेजें। ◆ अनूदित लेखों के लिए मूल लेख का उल्लेख करना अनिवार्य है। ◆ सभी कानूनी विवादों का निपटारा गुवाहाटी न्यायालय के अधीनस्थ होगा।

अलेख

असमीया बाल साहित्य में ज्योतिप्रसाद अगरवाला का स्थान

✍ डॉ. जिनाक्षी चुतीया

1.1. भूमिका :

शिशु की बुद्धि और मानसिक रुचि के विकास में बाल साहित्य एक बहुत ही अहम भूमिका ग्रहण करता है। बढ़ती उम्र के साथ उसकी बुद्धि और भावना से जुड़े साहित्य के साथ अगर उसका परिचय कराया जाता है तो उसका मानसिक विकास सहज और द्रुत गति से होता है। बाल साहित्य का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए शिशु के मानसिक विकास में सहायक होना, उसमें प्यार, दया, सहानुभूति आदि भाव को जगाना, उसकी अनुसंधित्सा जिजीविषा को बढ़ावा देना, सौंदर्यबोध उजागर करना, उसकी कल्पना शक्ति विकसित करना और नैतिक और पर्यावरण का सम्यक ज्ञान देना। पर इन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है शिशु को आनंद प्रदान करना।

शिशु का मन कल्पनाश्रयी होता है। वह अपने ही मानस जगत में विचरण करते हैं। बच्चों के मनोजगत में समय का कोई प्रभाव नहीं है, संभव- असंभव की सीमा नहीं है, बच्चे- बूढ़े में अंतर नहीं है। वहाँ पेड़-पौधे, जानवर बात करते हैं, खिलौने भी अभिमान करते हैं। जाने-अनजाने अनेक सवालों से शिशु का मनोजगत भरा रहता है। अनुशासन और तर्क से परे नाचते-गाते, झूमते हुए शिशुकाल व्यतीत होता है। अपने आसपास की दुनिया को देखकर अपार विस्मय से उसका मन भर जाता है और इसी से उत्पन्न होते हैं अनगिनत सवालों की बारिश। ऐसे में बाल साहित्य की रचना इन मानसिक स्थितियों को ध्यान में रखकर करनी चाहिए।

1.2. अध्ययन का महत्व :

असमीया साहित्य में बाल साहित्य की शुरुआत श्रीमंत शंकरदेव के समय से ही माना जाता है। पुराने असमीया साहित्य में बाल साहित्य के नाम से कोई अलग श्रेणी नहीं थी, लेकिन 'भीम-चरित', 'कान खोवा', 'शिशु लीला' आदि रचनाएं शिशु और वयस्क दोनों को मनोरंजन प्रदान करती थीं। इस तरह की रचनाओं से शिशु को आख्यान-उपाख्यान का ज्ञान भी मिलता था और नैतिक और धार्मिक आदर्शों का भी आभास होता था। आधुनिक युग में 'अरुणोदई' पत्रिका में बाल साहित्य का अंकुरण हुआ। इस पत्रिका में बाइबल की कहानी और अन्य नैतिक कहानी अथवा देश-विदेश की कहानियाँ प्रकाशित होती थीं। आनंद राम ढेकियाल फुकन के 'असमीया लरार मित्र' और मिशनरी साहित्यकारों के बाइबल से जुड़ी कहानियाँ उच्च कोटि का बाल साहित्य माने जाते हैं। आधुनिक असमीया साहित्य में साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा ने बाल साहित्य की अहमियत समझते हुए कई उल्लेखनीय रचनाएँ रचीं। इनमें

'ककादेउता आरु नाती लरा' (दादा और पोता), 'बूढ़ी आइर साधु' (बूढ़ी दादी की कहानियाँ) आदि प्रसिद्ध हैं, जो आज तक बाल और वयस्क पाठकों में काफी प्रचलित हैं। उनके अतिरिक्त नवकांत बरुवा, बलदेव महंत, मुहम्मद सोलईमन खान, मित्रदेव महंत, अतुलचन्द्र हजारिका, हरिनारायन दत्त बरुवा, भवेन्द्रनाथ सइकिया आदि लेखकों ने असमीया बाल साहित्य को समृद्ध किया है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला असमीया साहित्य के छायावादी युग के एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। उनकी प्रसिद्धि सिर्फ एक बाल साहित्यकार के रूप में नहीं थी, पर जो भी रचनाएँ उन्होंने बच्चों के लिए कीं, वे बहुत ही प्रचलित हुईं और इन साहित्यकारों की समालोचना से हम बाल साहित्य को एक नए नजरिए से देख सकते हैं। इसके उपरांत असमीया बाल साहित्य और हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं को उत्साहित करना भी इस अध्ययन का एक उद्देश्य है।

1.3. साहित्य की समीक्षा :

इस अध्ययन में मुख्य स्रोत के रूप में गोहाईं, हिरेन संपादित ज्योतिप्रसाद रचनावली के सातवें संशोधित और बढ़े हुए संस्करण : नवंबर, 2007, प्रकाशक : असम प्रकाशन परिषद और सहायक स्रोत के रूप में बरुवा, प्रह्लाद कुमार द्वारा लिखित ज्योति मनीषा के तृतीय संस्करण : अक्टूबर, 2003, प्रकाशक : बनलता प्रकाशन, गोगोई, स्निग्धा रानी(सं): असमीया शिशु साहित्य के प्रथम संस्करण, फरवरी, 2016, प्रकाशक: सदौ असम लेखिका समारोह समिति और रूपकुंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला जन्म शतवर्ष आयोजन समिति द्वारा प्रकाशित एवं संपादित रूपांतरर शिल्पी ज्योतिप्रसाद, प्रथम संस्करण, जून, 2003 को लिया गया है।

1.4. अध्ययन का क्षेत्र :

सीमित परिसर में इस अध्ययन में ज्योतिप्रसाद अगरवाला की कविताएँ और ज्योति रामायण का अध्ययन किया गया है।

1.5. कार्य-प्रणाली

इस अध्ययन में विश्लेषणात्मक कार्य-प्रणाली को ग्रहण किया गया है, जिसके अंतर्गत ज्योतिप्रसाद अगरवाला की कविताओं को देवनागरी लिपि में उल्लेख करके उनका हिंदी भावांतर किया गया है और उसके पश्चात अपने विचार व्यक्त करते हुए कविताओं की अलग-अलग पहलुओं को सामने लाया गया है और बच्चों पर उसका क्या प्रभाव पड़ सकता है, विषय पर चर्चा की गई है।

1.6. उद्देश्य :

(क) ज्योतिप्रसाद अगरवाला द्वारा रचित बाल साहित्य के अध्ययन से बाल साहित्य को एक नए नजरिए से देखना, और

(ख) असमीया बाल साहित्य और हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं को उत्साहित करना

2. ज्योतिप्रसाद अगरवाला के बाल साहित्य का अध्ययन

2.1. ज्योतिप्रसाद अगरवाला और उनकी साहित्य कृति का संक्षिप्त परिचय

ज्योतिप्रसाद अगरवाला प्रसिद्ध साहित्यकार, स्वतंत्रता सेनानी और फिल्म निर्माता थे। वे बहुआयामी और विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी ज्योतिप्रसाद अगरवाला एक नाटककार, कथाकार, गीतकार, पत्र-संपादक, संगीतकार, गायक सभी कुछ थे। मात्र 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'शोणित कोंवरी' नाटक की रचना कर असमीया साहित्य को समृद्ध कर दिया था। ज्योतिप्रसाद की सबसे बड़ी कृति है उनका संगीत, जिसे 'ज्योति संगीत' के रूप में भी जाना जाता है। ज्योतिप्रसाद आगरवाला के पूर्वज नवरंगराम आगरवाला राजस्थान के राजपूताना से अपने भाग्य के अन्वेषण में असम आए थे और असम के शोणितपुर जिले में अपना व्यवसाय आरंभ किया तथा असमीया कन्या से विवाह

करके असम के समाज का अंग हो गए। उनके ही परपोते ज्योतिप्रसाद अगरवाला असमीया साहित्य के ही नहीं, असम के समाज और सांस्कृतिक जीवन के एक युगांतकारी और अग्रणी व्यक्तित्व हैं। इन्होंने असमीया जाति के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और नैतिक उत्थान के लिए निरंतर प्रयास किया। संक्षेप में कहा जाए तो उन्होंने यूरोप के नवजागरण के बीज को असम में भी स्थापित करने का प्रयास किया और उसमें काफी हद तक सफल भी हुए। सन् 1935 में वे पहली असमीया फिल्म निर्माता भी बने। ज्योतिप्रसाद अगरवाला मूलत: छायावादी लेखक माने जाते हैं, पर अन्य विधाओं में भी उन्होंने असाधारण प्रतिभा दिखाई। वे बहुत ही संवेदनशील व्यि।त थे और बच्चे के मन:स्तत्व को समझ कर कई बाल उपयोगी कहानियों, कविताओं और गीतों की रचना की। संख्या की दृष्टि से ज्योतिप्रसाद अगरवाला का बाल साहित्य बहुत ज्यादा नहीं है, पर कम संख्यक रचनाओं में ही लेखक के सुगभीर चिंतन और सृजन प्रतिभा का परिचय मिलता है। उनकी कविताओं की संख्या बारह हैं। इन कविताओं के माध्यम से ही ज्योतिप्रसाद के बाल मनोविज्ञान चिंतन का संकेत मिलता है। बच्चों के लिए उन्होंने 'ज्योति रामायण' की रचना की, लेकिन विविध विधाओं में लिखते हुए ज्योतिप्रसाद ने 'ज्योति रामायण' को सम्पूर्ण नहीं किया, लेकिन असंपूर्ण रूप में भी यह एक अपूर्व बाल काव्य है। यहाँ पयार छंद का प्रयोग करके उन्होंने मध्ययुगीन असमीया साहित्य की भी याद दिलाई है। इसके साथ ही उन्होने 'घोड़ा दांगरिया' नामक एक नाटक की भी रचना की है, जहाँ उन्होंने एक घोड़े और एक गधे के माध्यम से नीति शिक्षा की धारणा दी है।

2.2. बाल कविताओं का अध्ययन :

बच्चों के कल्पनाविलासी मन को और अधिक रहस्यमयी करने हेतु उन्होंने अपने एकाधिक बाल कविताओं में सपनों का सहारा लिया है। ऐसी कुछ कविताएँ हैं :-'कुम्पुर सपोन', 'भूत पुवाली', 'अकनमानिर सपोन', और 'फुल कुँवरी'। रूपकथा की भाँति कुछ कल्पित कहानियों को स्वप्न के रूप में सजाकर इन कविताओं द्वारा बाल मन को आकर्षित और चकित किया जाता है। बाल मन के प्रति कवि की दृष्टि निरंतर है, इसलिए कविताओं में हास्यरस को भी जोड़ा है। उदाहरण के तौर पर इन कविताओं की कुछ पंक्तियों का हिंदी लिप्यांतरण नीचे दिया गया है:-

माँ, मोई सपोनत
देखिलों दुता
भूतर पोवाली
आरु दुजनी नाक जिलिका
चकु टेलेका
तिलिका तिलिका
पिलिका पिलिका
जखिनी छोवाली।
एटा कला, एटा बगा
नांगठ पिंगठ भूत
कथा पाते टकुट टकुट कुट।
एटाइ क'ले-पुट पुट पुट
ईटोवे माँ नाक जोकारि
क'ले - धुत धुत।

(कविता : कुम्पुर सपोन : भूत पोवाली, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 811)

हिन्दी भावांतर : बच्चा अपनी माँ को कहता है- माँ, मैंने सपने में देखा/ दो भूत के बच्चे/ और दो तिलमिलाता नाक वाली/ तिरछी आँखों वाली/ डायन की बच्ची/ एक काला, एक गोरा/ नंगा- पुंगा भूत/ बात करते हैं टुक टुक टुक/ एक ने कहा, पुट पुट पुट/ दूसरे ने नाक हिलाकर बोला - धुत धुत।

इस कविता में बच्चे को डराया नहीं गया है बल्कि उसे आश्चर्यचकित किया जाता है और वाद्ययंत्र की तरह छंदोबद्ध ध्वनि से बाल मन को आनंद प्रदान किया गया है। बच्चे को लगता है की भूत का बच्चा उसका कोई प्यारा-सा खिलौना या दोस्त है। कविता के हर एक श4द का मतलब नहीं होता है। एक बच्चा जिस तरह से बोलता है, उसी भाँति ध्वनि का प्रयोग करके बच्चे को पठन-पाठन के प्रति आग्रही करने में सहायक होता है।

'अकनमान ल'रा' (छोटा बच्चा) कविता में अपने जगत और जीवन को अपनी ही दृष्टि से बताता है -

माकतकोई देउताकर बुद्धि बर कम
'मइ किय नाचो- बागो किओ धिटिंगली करो
मइ किय जाप मारो
नाइ तार गम .....
देउताई मोके दिया
मए जदी बिस्कुट खाओं,
माये आको माजौतेइ
दिगदारी करि करि
कय बुले कोबाओं कोबाओं,
इनो केने अदभूत
बुजिके नापाओं'

(कविता : अकमान लोरा, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 814)

हिंदी भावांतर : माँ से भी पापा की बुद्धि कम है/ मैं 1यों नाचता हूँ/ 1यों शरारत करता हूँ/ 1यों छलांग लगाता हूँ/ कुछ पता नहीं उनको ... .../ पापा का ही मुझे दिया हुआ बिस्कुट अगर मैं ही खाता हूँ/ माँ बीच में आकर मुझे तंग करती है/ कि पिटाई करूंगी/ माँ इतनी अद्‌भुत क्यों है/ मैं नहीं समझ पाता हूँ।

इस कविता में बच्चा अपनी ही समझ से अपने माता-पिता का विचार करता है। अपने माता-पिता के दोष निकालता है और उनके विपरीत कार्य को समझ नहीं पाता है।

शायद ही कोई ऐसा बच्चा होगा, जिसे डॉक्टर से डर नहीं लगता है। हर बच्चा डॉक्टर से नाराज रहता है, पर कुछ कर नहीं पाता है, क्योंकि माता-पिता भी डॉक्टर की तरफदारी करते हैं। इसी भावना को कवि ने 'अकनमानी छोवाली' (छोटी बच्ची) कविता में अंकित किया है, जहाँ एक तरफ डॉक्टर के प्रति बच्चे के भय और गुस्सा दिखाया गया है तो दूसरी तरफ हास्यरस का प्रयोग करके बच्चे को आमोद भी देता है-

'डॉक्टर डाल
किय जानो घने घने
आमार घरले आहे
दुष्ट पेटाल
ताक देखिलै मोर
चुलि आगे जीव जाय
देवाई देवाई तार
गाटो गोंधाय'

(कविता : अकमानि छोवाली, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 820)

हिंदी भावांतर : डॉक्टर पता नहीं क्यों/ बार बार हमारे घर आते हैं/ दुष्ट मोटा कहीं का/ उसे देखते ही/ मेरी जान बालों के नोक तक आ जाती है/ उसका शरीर से दवा की बू आती है।

बच्चे की मानसिकता के प्रति अगर सूक्ष्म दृष्टि नहीं है, तो उसके द्वारा व्यवहृत शब्द भंडार को जानना असंभव है। ज्योतिप्रसाद अगरवाला को इसका भली-भाँति ज्ञान था। अपने शब्द चयन से वे बच्चे के कल्पना जगत में प्रवेश करने में सफल रहे। बच्चे की कल्पना शक्ति का अनुमान लगाकर उन्होंने 'कुम्पुर सपोन' (कुम्पु का सपना) नामक कविता लिखी-

'बेलीटो सोमाल खिड़िकिएदी
देओता बहा चकी खनत बहि
देओतार मऊ कविता बहीत
खस खस कइ बहुत करिले चही
माँ! तार पिछत मोलइ चाइ
मोक मातीलत मूर दुपियाई
मइ कोलुउ नाजाओं... ... ...'

(कविता : कुम्पुर सपोन, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 911)

हिंदी भावांतर : सूरज घुसा खिड़की से/ पापा के कुर्सी पर बैठकर/ पापा के कविता खाता में/ बहुत हस्ताक्षर किया/ माँ, उसके बाद मुझे देखकर/ सर हिलाके मुझे बुलाया/ मैंने बोला- नहीं जाऊँगा।

उल्लेखनीय बात यह है की ज्योतिप्रसाद अगरवाला ने अपनी कविताओं द्वारा बच्चों को उपदेश या शिक्षा देने की कोशिश नहीं की है। उनका लक्ष्य है बाल मन को आनंद प्रदान करना और कल्पनाशक्ति को बढ़ावा देना। ऐसा लगता है कि कविता रचते समय वे खुद ही एक

बच्चा बन जाते हैं और बच्चों के कल्पनाराज्य में खो जाते हैं। बच्चों की बोली को कविता की भाषा बनाना उनकी अनुपम शैली है। इन कविताओं को बच्चा गीत की तरह गाकर भी आनंद ले सकता है और सुनने वालों को भी आनंद दे सकता है।

2.3. 'ज्योति रामायण' का अध्ययन :

रामायण और महाभारत भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। भारतीय सभ्यता को जानने के लिए इन महाकाव्यों को पढ़ना अत्यंत आवश्यक है, किंतु एक बच्चे को रामायण वर्णित जीवन दर्शन और संसार की कठिन पहलुओं को जानने की आवश्यकता नहीं है। उसे तो रामायण (या महाभारत) को एक अनुपम कहानी के रूप में परिचय कराना है, ताकि बड़ा होकर उसमें भारतीय सभ्यता-संस्कृति को जानने की इच्छा जागृत हो। इसलिए ज्योतिप्रसाद अगरवाला ने 'ज्योति रामायण' की रचना की। महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखक ने इस कहानी को गद्य में न कहकर कविता के माध्यम को अपनाया, ताकि बच्चे को अधिक आकर्षित कर पाए। यह शैली शंकरी युग के साहित्य में पाई जाती है, पर आधुनिक काल में ज्योतिप्रसाद अगरवाला ने इसे अपनाकर साहित्य में एक नया प्रयोग किया।

'ज्योति रामायण' ज्योतिप्रसाद अगरवाला का एक अनन्य और अनुपम बालोपयोगी रचना है। इसके जरिए रामायण की मधुर कहानी कविताओं के माध्यम से बताने की कोशिश की गई है। इस रामायण में बड़ों के तर्क भरे जगत को अलग रखा गया है और इसका काव्य-कथन बच्चे को तुरंत मोहित करके उसे कल्पना जगत में ले जाता है। खुद ज्योतिप्रसाद अगरवाला की भाषा में, ''मेरे रामायण में वाल्मीकि वन का चित्रण ऐसे किया है, ताकि असमीया बच्चों को लगे कि वे अपने घर के बगीचे में ही हैं। वहाँ केतकी के फूल खिलते हैं, गिलहरी तबला बजाता है, सियार गाना गाता है।... रामायण जैसा ध्रुपदी काव्य को अगर असमीया बच्चों के मन में बिठाना है तो इसका वर्णन उनके जाने पहचाने प्रतीकों से करना होगा। उसका पठन भी सांगीतिक होना होगा। ठीक वाल्ट डिज्नी की एनिमल सिम्फनि की तरह...।'' (ज्योतिप्रसाद के शिशु साहित्य : ऋषिकेश गोस्वामी, वर्निल मानाह, पृ. 440)

'ज्योति रामायण' का 'आगकथा' यानी फोरवर्ड अत्यंत तात्पर्यपूर्ण है। यहाँ किस तरह द्रविड़, मंगोलीय, आर्य आदि अनेक जाति-उपजातियों के संगम से भारतीय महाजाति का गठन हुआ और इस महाजाति के द्वारा किस तरह भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ, इसका व्याख्यान है। इसके उपरांत भारत के प्राचीन इतिहास का उल्लेख करके किस प्रकार यह गौरवशाली इतिहास अंग्रेजों द्वारा कलंकित हुआ, उसका आभास भी दिया गया है।

'आर्यर एजन रजा भरत आगर
भारतवर्ष देश तेओरे नामर

... ...

नाना रजा नाना बेशे नाना राज्य पाती
नाना देश प्रजा पालि राखिले 2याति

... ...

पुरनि काहिनी पाबा महाभारतत
बेदब्यासे लिखि गल ज्वले जगतत
सेई दिन सेई रजा सेई प्रजा नाइ
जोवा जॅक नवजुग आहक बेगाइ
सेई आर्य गौरवर बेलि मार गल
हिंदुस्तान इंग्लंडर तलतिया हल
राम नामे आर्य रजा आसिल एजना
कुँवरी सुंदरी सीता कमल नयना
रामर कथारे लिखा आसे रामायण
मन दि पढ़िबा दे सरु पोनाकन'

(आगकथा : ज्योति रामायण, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 827-828)

हिंदी भावांतर : बहुत पहले भरत नामक एक राजा थे/ जिनके नाम से ही भारतवर्ष नाम पड़ा/... उसके बाद भी अनेक जगह अनेक राजाओं ने राज किया/ और प्रजा का पालन करके अपनी ख्याति बढ़ाई/... ऐसी पुरानी कहानी महाभारत में मिलती है/ जिसे वेदव्यास ने रचा और जगत उजलाया/ अब वो राजा भी नहीं है प्रजा भी नहीं है/उस आर्य युग का सूरज डूबा/ हमारा देश अंग्रेजों का गुलाम बना/ जो गया सो गया/ अब प्रार्थना यही है

की नवयुग जल्दी आये/राम नामक एक आर्य राजा थे/ जिनकी रानी अति सुंदरी कमल नयना सीता थी/ उस राम की कहानी ही रामायण है/ बच्चों, ध्यान से पढ़ना। उसके बाद दस्यु रत्नाकर कैसे ऋषि वाल्मीकि बना उसका रोचक वर्णन किया गया है। रत्नाकर, देवर्षि नारद और ब्रह्मा के चरित्र को बाल मन के उपयोगी तरीकों से चित्रित किया गया है। ज्योति रामायण के प्रारंभ में ही लेखक बच्चे के मन में अपार आश्चर्य पैदा कर देता है कि डाकू रत्नाकर ऐसा बलवान था कि जंगल के भयानक जानवर भी उससे डरते थे।

'प्रथमते राम अवतारारो आगत
मुनि-ऋषि तपोबन थकारे दिनत
दुष्ट डकाइट एटा नामे रत्नाकर
राजा होई फुरिसिल एखन बनत
बाघ, घोंग, सिंह तार लगे लगे फुरे
कुकुरर दरे तार पीछे पीछे लरे'

(वाल्मीकि मुनिर कथा : ज्योति रामायण, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 829)

हिंदी भावांतर : राम के अवतार से भी पहले, जब ऋषि-मुनि तपोवन में रहा करते थे, रत्नाकर नामक एक दुष्ट डाकू जंगल में राज करता था। जंगल के सारे जानवर उसके गुलाम थे और उसके पीछे-पीछे चलते थे। उसकी बात नहीं मानने से जानवरों की बड़ी पिटाई होती थी।

यह रामायण असमीया बच्चों के लिए लिखा गया है। दस्यु रत्नाकर ऋषि वाल्मीकि बन जाता है और तपोवन में रहने लगता है। उस तपोवन को कवि ने नाम दिया है वाल्मीकि वन। वाल्मीकि वन का वर्णन बच्चों के चिर-परिचित तरीकों से किया गया है। ऐसे अनेक जानवर, चिड़ियाँ, फूल और पौधों का चित्रण किया गया है, जिन्हें बच्चे पहचानते हैं। ऐसा करके बच्चों को रामायण की मूल कहानी के करीब लाया गया है।

'जिकमिक पखिलार चिकमिक पाखी
रिन जिन बिननिरे उरे मऊ माखि
फुटुका फुटुकी फूल खिलि खिलि पात
शेवाली नेवालि गुटि मालि जात जात'

(वाल्मीकि वनत कवितार जन्म : ज्योति रामायण, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 834)

हिंदी भावांतर : जगमगाती तितली की चमकती पंखुरी, मधुमक्खी की गूँजती आवाज, रंग बिरंगी तरह-तरह के फूल और प8ो। ये वर्णन वाल्मीकि वन का है, अर्थात वह तपोवन, जहां ऋषि वाल्मीकि ने रामायण रचना की थी। ज्योति रामायण में कवि ने एक ऐसी प्रकृति का चित्रण किया है, जिसका वर्णन सुनके या पढ़के बच्चों का मन कभी उदास नहीं होगा। कहानी के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ती चली जाएगी। कवि ने ऐसा करने में बड़ी ही सफलता से शब्द, ध्वनि और छंद का प्रयोग किया है।

'उत्तरर राजा आहे फिंदाई कपाल
प्रजासवे देखि बोले ऐटो पेटाल
तिनिकुरी राणी एरि आहिसे घरत
किजानिबा सीता को मिलिव कपालत
एड़वुली घोरात उठि थोलोक थोलोक
कदमत बाजे पेट तोलोक तोलोक'

(सीता स्वयम्वर : ज्योति रामायण, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ. 850)

हिंदी भावांतर : उत्तर दिशा से भी राजा आते हैं सीना तान के, देखकर प्रजागण बोलते हैं कि ये तो बहुत मोटे हैं। ये राजा अपने घर में साठ रानियाँ छोड़के आए हैं, और इस उम्मीद में हैं कि शायद सीता की प्राप्ति हो जाए। वो राजा इतने मोटे हैं कि जब घोड़ा पर बैठते हैं तो पेट से आवाज निकलती है।

इन पंक्तियों में सीता स्वयंवर का वर्णन किया गया है और बाल मन को भा जाने वाला हास्यरस का प्रयोग किया गया है।

ज्योति रामायण की एक विशेषता यह भी है कि रामायण की कहानी के वर्णन में असमीया ग्रामीण चित्रण को भी ध्यान में रखा है। सीता स्वयंवर के लिए पूर्वदेश से आए हुए राजा का वर्णन करते हुए कहा गया है -

पूर्व देशर परा आहिछे कोंवर
एशजोनी लिगिरीये वोवाई छोवर ।
शुकुला हातीत उठी आहे सेइ रजा।

देखि धन्य धन्य वोले मिथिलार प्रजा
रूपर पातेरे चोवा काठिरे सोनर
बाखर पंतोवा बरजापी मनोहर।
(ज्योति रामायण, सितार स्वयंवर, ज्योति रचनावली, पृ.सं.850)

हिंदी भावांतर : पूरब के देशों से आये हैं राजकुमार/ सौ दासियों को साथ लेकर/ सफेद हाथी पर आये वो राजा/ जिनको देखकर धन्य हुए मिथिला के प्रजा/ वह राजा जो आया है सोना, चाँदी और मणि से बनाया गया 'बरजापी' लेकर।

यहाँ राजा के प्रसंग में वरजापी का वर्णन ध्यान देने योग्य है। इसके अलावा 'सीतार विवाह' खंड में विवाह का जो वर्णन है, वह विवाह असमीया विवाह का ही रूप है।

बच्चे के लिए लिखा गया काव्य तभी बच्चे को आकर्षित करेगा, जब उसमें रस का मिश्रण हो। इन रसों में से वीर, भयानक, अद्‌भुत और हास्य रस बाल मन को अधिक मनोरंजन देते हैं। रस प्रयोग के मामले में कवि काफी हद तक सफल हुए हैं-
'आश्रमर ओपरेदी उरी ताई आहि
राम लक्ष्मणक देखि मारे घोरा हाहि
हाहिते कलिजा फाटे मानुहर
श्रीराम लक्ष्मण किन्तु अलर अचर
ताड़कार चकु जेन जुई अंगठा
गात साजपार नाइ आधा नगठा
(ताड़का राक्षसी वध : ज्योति रामायण, ज्योतिप्रसाद रचनावली, पृ.846)

हिंदी भावांतर : आश्रम के ऊपर से वो उड़के आती है/ राम लक्ष्मण को देखकर घोड़ा जैसा हँसती है/ उसकी हँसी से साधारण मनुष्य के कलेजे फटते हैं/ पर राम लक्ष्मण निडर खड़े रहते हैं/ ताड़का राक्षसी की आँख अंगार जैसी है/ बदन आधी नंगी है ...।

'ज्योति रामायण' बाल साहित्य होने पर भी यहाँ लेखक के गठनमुखी मनोभाव का परिचय मिलता है। 'रामर जन्म' खंड में राम के जन्म के बारे में कहते हुए लेखक ने राम को पृथ्वी की अशुभ शक्ति का विनाश करने वाली शक्ति के रूप में व्य1त किया है –
'आहिब लागिछे राम नव भारतर
दिव्य अस्त्र धरि धरि मुक्ति दिव जगतर
महामानवर हब नब अवतार
भारत उद्‌धार हब शोषक संहार।'
(रामर जन्म, पृ. सं 841, ज्योति रामायण, ज्योति रचनावली)

हिंदी भावांतर : आने लगा है राम नव भारत का/ दिव्य अस्त्र धारण करके जगत को मुक्ति देने/ महामानव के होंगे नव अवतार/ शोषक के संहार करके भारत को उद्‌धार करने।

3. अध्ययन का निष्कर्ष :

उल्लेखित साहित्य कृतियों की आलोचना से ज्योतिप्रसाद अगरवाला के बाल साहित्य की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं :-

1. मूलत: उनका साहित्य बच्चों के मनोरंजन के लिए और उन्हें खुशी देने के लिखा गया है।
2. बच्चों की कल्पनाशक्ति को विकसित करना उनका प्रमुख लक्ष्य है।
3. बच्चे की बोली का प्रयोग करके साहित्य को बाल मन के करीब लाने में वे सक्षम रहे।
4. बच्चों के लिए कविता लिखते समय ज्योतिप्रसाद अगरवाला मानो जैसे बच्चे में परिवर्तित हो जाते थे। बाल मनोविज्ञान को उन्होंने समझा और इसी कारण कम रचनाओं के बावजूद वे एक सफल बाल साहित्यकार के रूप में माने जाते हैं।
5. प्रकृति का चित्रण बच्चों के जाने-पहचाने तरीके और चीजों से करना उनके बाल साहित्य का अंग है।
6. रामायण जैसे महान और भव्य काव्य को असमीयापन में ढालकर कविता के माध्यम से बताया गया है और बच्चों को भारतीय संस्कृति, सभ्यता और इतिहास

से जुड़कर आगे बढ़ने के लिए उत्साहित किया गया है।

7. 'ज्योति रामायण' के जरिए बच्चों को भारतीय संस्कृति से जोड़ने के साथ-साथ असमीया संस्कृति और ग्रामीण जीवन से भी परिचित कराया गया है।

अत: हम देखते हैं की हिंदी तथा अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की तरह असमीया भाषा में भी बाल साहित्य का विकास और विस्तार हुआ, जिसमें ज्योतिप्रसाद अगरवाला भी एक प्रमुख साहित्यकार रहे। संख्या की दृष्टि से कम होकर भी इनकी रचनाएँ विशेष हैं। इस आलोचना में असमीया बाल साहित्य की सिर्फ एक झलक दिखाई गई है। अगर हिंदी साहित्य अथवा अन्य भारतीय भाषा के बाल साहित्य से ज्योतिप्रसाद अगरवाला या अन्य असमीया लेखक की रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया तो और अधिक नई बात या विशेषताएँ सामने आने की संभावना है। ❑

संदर्भ

मुख्य स्त्रोत :

1. गोहाईं, हिरेन(सं) : ज्योतिप्रसाद रचनावली, सातवाँ संशोधित और परिवर्धित संस्करण : नवंबर, 2007, असम प्रकाशन परिषद

सहायक स्त्रोत :

1. बरुवा, प्रह्लाद कुमार : ज्योति मनीषा, तृतीय संस्करण : अक्टूबर, 2003, बनलता प्रकाशन
2. गोगोई, स्निग्धा रानी(सं) : असमिया शिशु साहित्य, प्रथम संस्करण, फरवरी, 2016, सदौ असम लेखिका समारोह समिति
3. रूपकोंवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला जन्म शतवर्ष आयोजन समिति(सं) : रूपांतरर शिल्पी ज्योतिप्रसाद, प्रथम संस्करण, जून, 2003
4. शर्मा, सतेन्द्रनाथ : असमीया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त : दशम संस्करण, जून, 2011 सौमार प्रकाशन
5. डोलोई, हरिनाथ शर्मा : असमीया साहित्यर पूर्ण इतिहास : प्रथम संस्करण, 2000, पद्म प्रिया लाइब्रेरी
6. तामुली, गीताश्री और गोगोई, अखिल(सं) : शिल्पिर आलोकयात्रा : प्रथम प्रकाशन, 2002, ज्योति प्रकाशन
7. दास, हितेश और तालुकदार, ध्रुवकुमार : बर्निल मानाह : असम साहित्य सभा के 72वें सत्र की स्मारिका, बरपेटा रोड अधिवेशन, जनवरी, 2013
8. प्रकाश (पत्रिका) : ज्योतिप्रसाद विशेषांक, नवंबर 4, 1982, असम प्रकाशन परिषद

- सहायक अध्यापिका, हिंदी विभाग,
बी.एच. कॉलेज, हाउली, बरपेटा, असम
चलभाष : 9706321326,